Q. सिन्धु घाटी सभ्यता के लोगों की भवन-निर्माण एवं नगर-योजना का वर्णन करें।

Ans → विश्व की प्राचीन सभ्यताओं में सिन्धु घाटी की सभ्यता का सबसे महत्वपूर्ण स्थान है। जहाँ तक इसकी प्राचीनता का सवाल है तो आधुनिक विचारों के अनुसार यह सभ्यता 2500 ई॰ पू॰ से 1750 ई॰ पू॰ तक अस्तित्व में रही। इस सभ्यता की सर्वप्रथम जानकारी 1922 ई॰ में जॉन मार्शल और रखालदास बनर्जी जैसे पुरातत्वेताओं के निर्देशन में हुए। सिन्धुघाटी सभ्यता की मुख्य विशेषता यह कहे की यह सभ्यता नगरीय सभ्यता थी। इस सभ्यता के अन्तर्गत कई शहरों के अवशेष पाए गए हैं, जैसे - हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, लोथल, कालीबंगा, बनावली। इन अवशेषों को देखने से पता चलता है कि इस काल में नगरों का निर्माण एक नियोजीत योजना के अनुसार किया गया था। जिसमें सुन्दरता के साथ-साथ उपयोगिता को भी ध्यान में रखा गया था। इस तरह का नगर निर्माण इस बात को ~~साक्ष~~ साक्षी है कि विधिवत नक्सा बनाकर एवं उसे स्वीकृत कराकर ही नगर का निर्माण कराया गया होगा। नगरों का निर्माण निम्न प्रकार से सुसज्जित था—

(i) ~~सड़कें~~ :

नगर योजना :- सिन्धुघाटी की खुदाईयों से पता लगा ~~है~~ है कि ~~हड़~~ हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो दोनों ही विशाल नगर थे। यहाँ पर जिस तरह का नगर-विन्यास मिला है उससे स्पष्ट होता है कि इन नगरों का निर्माण एक निश्चित योजना के अनुसार किया गया था। नगरों की सड़कें उत्तर से दक्षिण को अथवा पूर्व से पश्चिम को एक दूसरे को सीधे समकोण पर काटती हुई जाती थी। प्रशस्त राजपथ, चौड़ी गलियाँ, सफाई का उत्तम प्रबंध, गंदे पानी बाहर निकालने के लिए लम्बी-चौड़ी नालियाँ की व्यवस्था, सार्वजनिक स्नानागार, ~~कु~~ कुआँ, मकानों में हवादार खिड़कियों का प्रबंध आदि इस तथ्य को प्रमाणित करते हैं कि नगरों का निर्माण और विस्तार वास्तु-विशारदों की निश्चित योजना एवं श्रेष्ठ व्यवस्था के आधार पर होता था।

भवन-निर्माण :- खुदाई में छोटे-बड़े मकान मिले हैं। मकानों के निर्माण में सादगी और उपयोगिता पर अधिक ध्यान दिया जाता था। सिन्धु-घाटी के नागरिक भवनों के निर्माण में सजावट एवं बाह्य आडम्बर के विशेष प्रेमी नहीं थे। मकानों के अवशेष से स्पष्ट हो जाता है कि भवन-निर्माण योजनाबद्ध ~~तरीके~~ तरीके से होता था।

Scanned with CamScanner

सड़क के दोनों किनारे पर मकान होते थे जो पक्की ईंटों के बने होते थे। यह ईंटें लकड़ी से पकाई जाती थी। अधिकांश मकान दो मंजिले होते थे; परन्तु दीवारों की मोटाई से पता लगता है कि, दो से भी अधिक मंजिलों के मकान बनते थे। निचली मंजिल से ऊपर के मंजिल में जाने के लिए सीढ़ियाँ बनी होती थी। अधिकांश सीढ़ियाँ संकीर्ण मिली है, परन्तु कुछ काफी चौड़ी तथा सुविधाजनक सीढ़ियाँ भी मिली है। बड़े-बड़े मकानों के दरवाजे बड़े और चौड़े होते थे। कुछ मकानों के दरवाजे तो इतने चौड़े मिले है कि उनमें रथ तथा बैलगाड़ियाँ भी आ-जा सकती थी। कमरों में दिवारों के साथ आलमारियाँ भी लगी होती थी। प्रत्येक घर में आंगन, पाकशाला, स्नानगृह, शौचगृह, नालियाँ तथा कुएँ रहते थे। मकानों में रोशनी और हवा के लिए झरोखे बनाये जाते थे। मकानों में लकड़ी के खम्भों का भी व्यवहार हुआ था। खिड़कियां घर के आंगन में खुलती थी। हड़प्पा सभ्यता में ढाड़ा महराब का प्रयोग मिलता है।

हड़प्पा और मोहनजोदड़ो में दो प्रकार के मकान मिले है। उनसे अनुमान लगाया जाता है कि बड़े मकानों में अमीर रहते थे। छोटे मकान में समाज के गरीबों के थे। प्रत्येक घर में एक आंगन और दो कमरे होते थे। ऐसे मकान 56 फीट + 3 फीट है। अभिजात वर्ग के मकान दुमंजिले होते थे। ऐसे मकान की नींव अधिक गहरी और दीवार अधिक चौड़ी होती थी। उनकी छतें लकड़ी तथा मिट्टी से पाटी जाती थी। दीवारों पर चूने और मिट्टी से पलस्तर किये जाते थे। मकान के निचले भाग में दरबानों और नौकरों के लिए अलग कमरे होते थे। मकान की ऊपरी मंजिल पर जाने के लिए ~~सीढ़िया~~ सीढ़ियाँ बनाई जाती थी।

कुछ ऐसे मकान भी मिले है जो सम्भवतः मजदूरों के मुहल्ले थे। मोहनजोदड़ो में ऐसे 16 मकान मिले है। इनमें प्रत्येक 20 फीट × 12 फीट है। हड़प्पा में इस तरह के 1 कमरेवाले 15 मकान मिले है। इन इलाकों में ऐसे मजदूर रहते थे जो सम्भवतः गुलामों का काम करते थे। चन्हदड़ो में भी मजदूरों की बस्ती या कारखाने का प्रमाण मिला है।

सड़क :- सड़कों का निर्माण भी एक निश्चित योजनानुसार होता था। सड़कें उत्तर से दक्षिण और पूरब से पश्चिम जाती थी। सबसे बड़ी सड़क की चौड़ाई 30 फीट थी। सड़के एक-दूसरे को समकोण पर काटती थी और नगर को आयताकार खण्डों में विभाजित करती थी। लोथल, कालीबंगा आदि नगरों में यह बात दिखाई पड़ती है। सड़कों का सम्बंध गलियों से था। गलियाँ भी 3 से 7 फीट तक चौड़ी होती थी। नालियों की सफाई की व्यवस्था थी।

Scanned with CamScanner

नालियों का प्रबंध ÷ ~~इस और~~ नगर के मैले जल को बाहर ले जाने के लिए नालियों का प्रबंध किया गया था। घर और नगर साफ करने के लिए नालियों की जैसी सुन्दर व्यवस्था सिन्धुघाटी में थी वैसी क्रीट की राजधानी नौसस को छोड़कर किसी देश में नहीं थी। प्रत्येक घर की नाली का संबंध सड़क की नाली से था जो मकान का गन्दा पानी निकालती थी। नालियाँ अठारह इंच तक गहरी होती थी। बीच-बीच में पानी रोकने के लिए छोटी खाइयाँ भी थी। वर्षा का पानी बाहर निकालने के लिए बड़ी-बड़ी नालियाँ थी। कम चौड़ी नालियाँ पक्की ईंटो से और अधिक चौड़ी नालियाँ पत्थर के टुकड़ो से बनी और ढकी होती थी। घर के कमरो, रसोई, स्नानागार और शौचगृह की निकास-नालियाँ एक बड़ी नाली में मिलती थी और विभिन्न घरों से निकाली ये नालियाँ एक बड़ी सार्वजनिक नाली में मिलती थी। नरमोरवा (मेनहोल) को बड़ी-बड़ी ईटो से ढंका जाता था। नालियों को ढकने में टोड़ा मेहराब का भी प्रयोग मिलता है। इसका उदाहरण विशाल स्नानागार के जलाशय की नाली है। गार्डन चाइल्ड ने इस जल-निकासी-प्रणाली की प्रशंसा करते हुए कहा है "गलियों की सुन्दर पंक्तियाँ और नालियो का उत्तम प्रबंध तथा उनकी सतत स्वच्छता संकेत देती है कि कोई नियमित नगर-शासन था और वह अपना काम सावधानी से करता था।"

कुओं का प्रबंध ÷ आसानी से जल प्राप्त करने के लिए सिन्धुघाटी के लोगो ने कुओं का प्रबंध किया था। पानी के लिए प्रत्येक घर में कुआँ था, लेकिन सार्वजनिक कुएं भी थे। खुदाई में जो कुएँ मिले है उनकी चौड़ाई दो से सात फीट तक है। सार्वजनिक कुओं के अतिरिक्त जो जनता के लिए होते थे, लोग अपने घरों में भी व्यक्तिगत प्रयोग के लिए कुएं बनवाते थे।

स्नानागार ÷ खुदाई में अबतक जितने भवनो के अवशेष मिले है उनमें मोहनजोदड़ो के दुर्ग का विशाल स्नानागार सबसे महत्वपूर्ण है यह आयताकार तलाब है जो 39 फीट लम्बा और 23 फीट चौड़ा तथा 8 फीट गहरा है। स्नानागार का फर्श पक्की ईंटों से बना है। नीचे जाने के लिए सिढ़ियाँ है। स्नानागार में पानी भरने और निकालने के लिए रास्ते थे। सम्भवतः इस स्नानागार का प्रयोग महत्वपूर्ण धार्मिक अनुष्ठानो के लिए होता था। इसमें पास के कुएँ से पानी आता था। इसकी सुदृढ़ बनावट, इसका पक्का फर्श, सीढ़ियाँ और पानी निकास की चौड़ी नालियाँ तत्कालीन वास्तुकला की सफलता प्रमाणित करती है।

सार्वजनिक भवन ÷ मोहनजोदड़ो में एक विशाल भवन के अवशेष मिले है जिसकी लम्बाई 230 फीट और चौड़ाई 78 फीट थी। दो विशाल आँगन, भाण्डारगार और भव्य कक्ष से सुसज्जित यह भवन शानदार है। सम्भवतः धार्मिक एवं ~~सामा~~ राजनीतिक जीवन का यह सार्वजनिक भवन केन्द्र थी। मोहनजोदड़ो में सड़क के किनारे कहीं-कहीं सार्वजनिक भोजनालयों के अवशेष भी मिले है।

Scanned with CamScanner

अन्नागार :- हड़प्पा में धान्यागार के अवशेष मिले हैं जो 50 फीट लम्बे और 20 फीट चौड़े हैं। ये दो कतारों में हैं और प्रत्येक में छह कोठियाँ हैं। स्पष्ट है कि धान्यागार हड़प्पा संस्कृति के महत्वपूर्ण अंग थे। कालीबंगा में एक दुर्ग मिला है। लोथल में एक विशाल चबूतरा, योजनाबद्ध सड़कों और मकानों का पता चला है।

अनाज रखने के लिए बड़े-बड़े गोदाम थे। हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, चन्हुदड़ो, लोथल, कालीबंगा में अनेक अन्नागार खुदाई में मिले हैं। सिन्धुघाटी के लोगों का व्यापार-सम्बन्ध दूर-दूर तक था। इससे पता चलता है कि व्यापारी का ~~सम्बन्ध~~ सम्पर्क था। मोहनजोदड़ो तथा हड़प्पा में सड़कों के किनारे कुछ ऐसे मकान हैं जहाँ खुदरा दुकानें होंगी।

किलाबन्दी :- सुरक्षा के लिए नगर मजबूत दीवारों से घेर दिया जाता था। दीवारें कच्ची ईंटों की बनती थीं, लेकिन बाहर से पक्की ईंटों से उन्हें मजबूत बनाया जाता था। हड़प्पा के किले की दीवार 40 फीट चौड़ी और 36 फीट ऊँची थी।

इस प्रकार सिन्धुघाटी के निवासी भवन-निर्माण-कला में पूर्णतः पक्के थे। निवास-स्थान सुन्दर ढंग से बनाये जाते थे। वहाँ भवन के निर्माण में उपयोगिता एवं स्थायित्व पर विशेष ध्यान दिया जाता था।

समाप्त

Kumar Mahpal
Asst. Prof.
Deptt. of History
G.N.S.M.C. Gorhwa

Scanned with CamScanner